

शीलं श्रीजिनभाषितं शुचितरं देवेन्द्रवृन्दैः स्तुतं शीलं दुःखकलंकपंकसलिलं शीलं जगन्मोहनम् ।  
ये भव्याः प्रतिपालयन्ति नितरां नित्यं सुशर्मप्रदं भुक्त्वा ते त्रिदशादिसौख्यमतुलं शुद्धं लभन्ते सुखम् ॥२२॥  
इति कथाकोशे नागदत्तायाः कथा समाप्ता ।

## ५२. द्वीपायनमुनेः कथा ।

प्रणम्य त्रिजगत्पूज्यं श्रीजिनं शर्मकोटिदम् । द्वीपायनस्य संवक्ष्ये चरित्रं मुनिभाषितम् ॥१॥  
पुरी द्वारवती ख्याता देशे सौराष्ट्रसंज्ञके । श्रीमन्नेमिजिनेन्द्रस्य जन्ममायापवित्रिता ॥२॥  
तत्र श्रीबलभद्राख्यवासुदेवौ नरेश्वरौ । महाराज्यं प्रकुर्वन्तौ नवमौ हलिकेशवौ ॥३॥  
एकदा तौ जगत्पूज्यं श्रीमन्नेमिजिनाधिपम् । ऊर्जयन्तगिरौ नत्वा समवादिसृतौ स्थितम् ॥४॥  
अष्टधा सुमहाद्रव्यैः समभ्यर्च्य सुभक्तितः । स्तुत्वा सद्धर्ममाकर्ण्य हृष्टो ज्येष्ठो जगाद च ॥५॥  
जगद्धन्धो जिनाधीश केवलज्ञानलोचन । ब्रूहि भो त्रिजगन्नाथ प्रोल्लसत्करुणार्णव ॥६॥  
ईदृशी वासुदेवस्य सम्पदा शर्मदायिनी । भविष्यति कियत्कालं लोकालोकप्रकाशक ॥७॥  
तदा प्राह जिनाधीशो वासुदेवस्य सम्पदा । स्थित्वा द्वादशवर्षेषु ततो नाशं प्रयास्यति ॥८॥

फल से दुर्गति में जाता है। इसलिए सत्पुरुषों को उचित है कि वे जिनेन्द्र भगवान् के उपदेश किए, सबको प्रसन्न करने वाले और सुख-प्राप्ति के साधन ब्रह्मचर्य व्रत का सदा पालन करें ॥१३-२२॥

## ५२. द्वीपायन मुनि की कथा

संसार के स्वामी और अनन्त सुखों के देने वाले श्रीजिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर द्वीपायन मुनि का चरित लिखा जाता है, जैसा पूर्वाचार्यों ने उसे लिखा है ॥१॥

सोरठदेश में द्वारका प्रसिद्ध नगरी है। नेमिनाथ भगवान् का जन्म यहीं हुआ है। इससे यह बड़ी पवित्र समझी जाती है। जिस समय की यह कथा लिखी जाती है। उस समय द्वारका का राज्य नवमें बलभद्र और वासुदेव करते थे। एक दिन ये दोनों राज-राजेश्वर गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ भगवान् की पूजा-वन्दना करने को गए। भगवान् की इन्होंने भक्तिपूर्वक पूजा की और उनका उपदेश सुना। उपदेश सुनकर इन्हें बहुत प्रसन्नता हुई इसके बाद बलभद्र ने भगवान् से पूछा-हे संसार के अकारण बन्धो, हे केवलज्ञानरूपी नेत्र के धारक, हे तीन जगत् के स्वामी! हे करुणा के समुद्र! और हे लोकालोक के प्रकाशक, कृपाकर कहिए कि वासुदेव को पुण्य से जो सम्पत्ति प्राप्त है वह कितने समय तक ठहरेगी? भगवान् बोले-बारह वर्ष पर्यन्त वासुदेव के पास रहकर फिर नष्ट हो जायेगी। इसके सिवा मद्य-पान से यदुवंश का समूल नाश होगा, द्वारका द्वीपायन मुनि के सम्बन्ध से जलकर खाक हो जायेगी, और बलभद्र, तुम्हारी इस छुरी द्वारा जरत्कुमार के हाथों से श्रीकृष्ण की मृत्यु होगी। भगवान् के द्वारा यदुवंश द्वारका और वासुदेव का भविष्य सुनकर बलभद्र द्वारका आए। उस समय द्वारका में जितनी शराब थी, उसे उन्होंने गिरनार पर्वत के जंगल में डलवा दिया। उधर द्वीपायन अपने

यादवानां क्षयो मद्याद्-भविष्यति निसंशयः। दाहो द्वारवतीपुर्या द्वीपायनकुमारतः ॥९॥  
 अनया छुरिकया च बलभद्र त्वदीयया। जरत्कुमारहस्तेन वासुदेवक्षयो ध्रुवम् ॥१०॥  
 तच्छ्रुत्वा वासुदेवेन मद्यं सर्वं प्रवेगतः। ऊर्जयन्तगिरेः कुंजे निक्षिप्तं पापकारणम् ॥११॥  
 द्वीपायनो मुनिर्भूत्वा पूर्वदेशं गतो द्रुतम्। मूढाः कुर्वन्तु कर्माणि नान्यथा जिनभाषितम् ॥१२॥  
 छुरिका बलभद्रस्य घृष्टा सूक्ष्मा च सागरे। निक्षिप्ता सा तु मत्स्येन गृहीता कर्मयोगतः ॥१३॥  
 पारंपर्येण तां प्राप्य विध्वस्तछुरिकां तदा। चक्रे जरत्कुमारोसौ बाणाग्रं पापकर्मणा ॥१४॥  
 ततो द्वादशवर्षेषु द्वीपायनमुनिर्मुदा। अजानन्नधिकान्मासान्समागत्य निजेच्छया ॥१५॥  
 ऊर्जयन्तगिरेः पार्श्वे स्थितश्चातापनेन सः। योगेन कर्मणां योगो हन्यते केन भूतले ॥१६॥  
 तस्मिन्नेव दिने पापकर्मणा प्रेरितैर्भृशम्। यादवानां कुमाराद्यैः क्रीडां कृत्वा च पर्वते ॥१७॥  
 मार्गे महातृषाक्रान्तैर्भ्रान्त्या मद्याश्रितं जलम्। पीत्वा पुरं प्रगच्छद्भिर्मत्तवन्नष्टचेतनैः ॥१८॥  
 द्वीपायनमुनेरग्रे रक्षार्थं भक्तितस्तराम्। साद्धं श्रीवासुदेवेन बलभद्रेण निर्मिताम् ॥१९॥  
 पाषाणवृत्तिमालोक्य पाषाणैः स मुनिस्तदा। पूरितस्तैर्महापापं हा कष्टं मद्यचेष्टितम् ॥२०॥

सम्बन्ध से द्वारका का भस्म होना सुन मुनि हो गए और द्वारका को छोड़कर कहीं अन्यत्र चल दिये। मूर्ख लोग न समझ कुछ यत्न करें, पर भगवान् का कहा कभी झूठा नहीं होता। बलभद्र ने शराब को तो फिकवा दिया था। अब एक छुरी और उनके पास रह गई थी, जिसके द्वारा भगवान् ने श्रीकृष्ण की मौत होना बतलाई थी। बलभद्र ने उसे भी खूब घिस-घिसाकर समुद्र में फिकवा दिया। कर्मयोग से उस छुरी को एक मच्छ निगल गया और वही मच्छ फिर एक मल्लाह के जाल में आ फँसा। उसे मारने पर उसके पेट से वह छुरी निकली और धीरे-धीरे वह जरत्कुमार के हाथ तक भी पहुँच गई जरत्कुमार ने उसका बाण के लिए फला बनाकर उसे अपने बाण पर लगा लिया ॥२-१४॥

बारह वर्ष हुए नहीं, पर द्वीपायन को अधिक महीनों का ख्याल न रहने से बारह वर्ष पूरे हुए समझ वे द्वारका की ओर लौट आकर गिरनार पर्वत के पास ही कहीं ठहरे और तपस्या करने लगे। पर तपस्या द्वारा कर्मों का ऐसा योग कभी नष्ट नहीं किया जा सकता। एक दिन की बात है कि द्वीपायन मुनि आतापन योग द्वारा तपस्या कर रहे थे। इसी समय मानों पापकर्मों द्वारा उभारे हुए यादवों के कुछ लड़के गिरनार पर्वत से खेल-कूद कर लौट रहे थे। रास्ते में इन्हें बहुत जोर की प्यास लगी। यहाँ तक कि वे बेचैन हो गए। उनके लिए घर आना मुश्किल पड़ गया। आते-आते इन्हें पानी से भरा एक गड्ढा दिख पड़ा। पर वह पानी नहीं था किन्तु बलभद्र ने जो शराब ढुलवा दी थी वही बहकर इस गड्ढे में इकट्ठी हो गई थी। उस शराब को उन लड़कों ने पानी समझ पी लिया। शराब पीकर थोड़ी देर हुई होगी कि उसने उन पर अपना रंग जमाना शुरू किया। नशे से वे सुध-बुध भूलकर उन्मत्त की तरह कूदते-फाँदते आने लगे। रास्ते में इन्होंने द्वीपायन मुनि को ध्यान करते देखा। मुनि की रक्षा के लिए बलभद्र ने उनके चारों ओर एक पत्थरों का कोट सा बनवा दिया था। एक ओर उसके

मत्तो मातृभगिन्यादौ कामचेष्टां प्रवाञ्छति। वेत्ति किञ्चिन्न पापात्मा मद्यपानी सुनिर्दयः ॥२१॥  
 तां वार्त्ता च समाकर्ण्य बलभद्रेण धीमता। युतेन वासुदेवेन तत्रागत्य प्रभक्तितः ॥२२॥  
 सोपि कण्ठगतप्राणो द्वीपायनमुनिर्द्रुतम्। सत्क्षमां कारितो मूढो दर्शयामास चांगुली ॥२३॥  
 ततो मृत्वा क्रुधा भूत्वा सोपि भावनदेवकः। तौ द्वौ मुक्त्वाग्निना पापी सर्वा द्वारवतीं पुरीम् ॥२४॥  
 भस्मीचक्रेति कोपेन किं करोति न मूढधीः। ततो भव्यैः प्रशान्त्यर्थं कोपः सन्त्यज्यते सदा ॥२५॥  
 नष्ट्वा तौ भ्रातरौ कष्टं देहमात्रपरिग्रहौ। संप्राप्तौ काननं घोरं पापपाके क्व सम्पदा ॥२६॥  
 पुण्योदये सुखी प्राणी भवेद्दुःखी स्वपापतः। तस्मात्पापं परित्यज्य पुण्यं कुर्वन्तु धीधनाः ॥२७॥  
 पुण्यं पात्राश्रितं दानं पुण्यं श्रीजिनपूजनम्। पुण्यं शीलोपवासाद्यैर्भाषितं पूर्वसूरिभिः ॥२८॥  
 वने जरत्कुमारेण तेन बाणेन कष्टतः। वासुदेवस्तृषाक्रान्तो हतः स्वस्थानकं गतः ॥२९॥

आने-जाने का दरवाजा था। इन शैतान लड़कों ने मजाक में आ उस जगह को पत्थरों से पूर दिया। सच हैं, शराब पीने से सुध-बुध भूलकर बड़ी बुरी हालत हो जाती है। यहाँ तक कि उन्मत्त पुरुष अपनी माता बहिनों के साथ भी बुरी वासनाओं को प्रकट करने में नहीं लजाता है ॥१५-२१॥

शराब पीने वाले पापी लोगों को हित-अहित का कुछ ज्ञान नहीं रहता। इन लड़कों की शैतानी का हाल जब बलभद्र को मालूम हुआ तो वे वासुदेव को लिए दौड़े-दौड़े मुनि के पास आए और उन पत्थरों को निकाल कर उनसे क्षमा की प्रार्थना की। इस क्षमा कराने का मुनि पर कुछ असर नहीं हुआ। उनके प्राण निकलने की तैयारी कर रहे थे। मुनि ने सिर्फ दो उंगलियाँ उन्हें बतलाई और थोड़ी ही देर बाद वे मर गए। क्रोध से मर कर तपस्या के फल से वे व्यन्तर हुए। उन्होंने कुअवधि द्वारा अपने व्यन्तर होने का कारण जाना तो उन्हें उन लड़कों के उपद्रव की सब बातें ज्ञात हो गई यह देखकर व्यन्तर को बड़ा क्रोध आया। उसने उसी समय द्वारका में आकर आग लगा दी। सारी द्वारका धन-जन सहित देखते-देखते खाक हो गई सिर्फ बलभद्र और वासुदेव ही बच पाए, जिनके लिए कि द्वीपायन ने दो उंगलियाँ बतलाई थी। सच है, क्रोध के वश हो मूर्ख पुरुष सब कुछ कर बैठते हैं। इसलिए भव्यजनों को शान्ति-लाभ के लिए क्रोध को कभी पास भी न फटकने देना चाहिए। उस भयंकर अग्नि लीला को देखकर बलभद्र और वासुदेव का भी जी ठिकाने न रहा। ये अपना शरीर मात्र लेकर भाग निकले। यहाँ से निकल कर वे एक घोर जंगल में पहुँचे। सच है-पाप का उदय आने पर सब धन-दौलत नष्ट होकर जी बचाना तक मुश्किल पड़ जाता है। जो पलभर पहले सुखी रहा हो वह दूसरे ही पल में पाप के उदय से अत्यन्त दुःखी हो जाता है इसलिए जिन लोगों के पास बुद्धिरूपी धन है, उन्हें चाहिए कि वे पाप के कारणों को छोड़कर पुण्य के कार्यों में अपने हाथों को बँटावें। पात्र-दान, जिन-पूजा, परोपकार, विद्या-प्रचार, शील, व्रत, संयम आदि ये सब पुण्य के कारण हैं। बलभद्र और वासुदेव जैसे ही उस जंगल में आए, वासुदेव को यहाँ अत्यन्त प्यास लगी। प्यास के मारे वे गश खाकर गिर पड़े। बलभद्र उन्हें ऐसे ही छोड़कर जल लाने चले

शोकाच्छ्रीबलभद्रस्तु संवहन्मृतकं तदा। पूर्वजन्मप्रमित्रेण देवेन प्रतिबोधितः ॥३०॥  
 चन्दनाद्यैः सुधीः शीघ्रं कृत्वा तद्वहनक्रियाम्। त्रिधा वैराग्यसम्पन्नो जैनतत्त्वविदांवरः ॥३१॥  
 दीक्षामादाय जैनेन्द्रीं तपः कृत्वा सुदुस्सहम्। तुंग्यां सम्प्राप्य माहेन्द्रस्वर्गं देवो बभूव सः ॥३२॥  
 लसत्किरीटभूषाद्यैर्दिव्यवस्त्रैः सुभूषितः। सेवितः सुरसन्दोहैरप्सरोग्भिः समन्वितः ॥३३॥  
 नाना भोगान्प्रभुञ्जानः स्वर्गलोकसमुद्भवान्। मेरुकैलासशैलादौ जिनबिम्बानि पूजयन् ॥३४॥  
 महाभक्त्या विमानस्थो गत्वा सद्धर्महेतवे। साक्षात्तीर्थङ्करानुच्चैः सद्दृष्टिस्तान्समर्चयन् ॥३५॥  
 इत्यादिश्रीजिनाधीशमहासेवापरायणः। स देवः पूर्वपुण्येन संस्थितस्तत्र सौख्यतः ॥३६॥  
 स श्रीमान्बलभद्रदेवसुमुनी रत्नत्रयालङ्कृतः श्रीमज्जैनपदाब्जयुग्ममधुलिट् चारित्रचूडामणिः।  
 शान्तिं कान्तिमनःप्रसन्नसहितां नित्यं महामङ्गलं दद्यान्मे गुणरत्नरंजितमतिः सद्बोधसिन्धुः सुखम् ॥३७॥

**इति कथाकोशे द्वीपायनमुनेः कथा समाप्ता।**

गए। इधर जरत्कुमार न जाने कहाँ से इधर ही आ निकला। उसने श्रीकृष्ण को हरिण के भ्रम से बाण द्वारा बेध दिया। पर जब उसने आकर देखा कि वह हरिण नहीं किन्तु श्रीकृष्ण है तब तो उसके दुःख का कोई पार न रहा। पर अब वह कुछ करने-धरने को लाचार था। वह बलभद्र के भय से फिर उसी समय वहाँ से भाग लिया। इधर बलभद्र जब पानी लेकर लौटे और उन्होंने श्रीकृष्ण की यह दशा देखी तब उन्हें जो दुःख हुआ वह लिखकर नहीं बताया जा सकता। यहाँ तक कि वे भ्रातृप्रेम से सिड़ी से हो गए और श्रीकृष्ण को कन्धों पर उठाये महीनों पर्वतों और जंगलों में घूमते फिरे। बलभद्र की यह हालत देख उनके पूर्व जन्म के मित्र एक देव को बहुत खेद हुआ। उसने आकर इन्हें समझा-बुझा कर शान्त किया और उनसे भाई का दहन-संस्कार करवाया। संस्कार कर जैसे ही वे निर्वृत्त हुए, उन्हें संसार की दशा पर बड़ा वैराग्य हुआ। वे उसी समय सब दुःख, शोक, माया-ममता छोड़कर योगी हो गए। उन्होंने फिर पर्वतों पर खूब दुस्सह तप किया ॥२२-३२॥

अन्त में धर्मध्यान सहित मरण कर ये माहेन्द्र स्वर्ग में देव हुए वहाँ वे प्रतिदिन नित नये और मूल्यवान् सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषण पहनते हैं, अनेक देव-देवी उनकी आज्ञा में सदा हाजिर रहते हैं। नाना प्रकार के उत्तम से उत्तम स्वर्गीय भोगों को वे भोगते हैं, विमान द्वारा कैलाश, सम्मेद-शिखर, हिमालय, गिरनार आदि पर्वतों की यात्रा करते हैं और विदेह क्षेत्र में जाकर साक्षात् जिनभगवान् की पूजा-भक्ति करते हैं। मतलब यह है कि पुण्य के उदय से उन्हें सब कुछ सुख प्राप्त हैं और वे आनन्द-उत्सव के साथ अपना समय बिताते हैं ॥३३-३६॥

जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप इन तीन महान् रत्नों से भूषित हैं, जो जिन भगवान् के चरणों के सच्चे भक्त हैं, चारित्र धारण करने वालों में जो सबसे ऊँचे हैं, जिनकी परम पवित्र बुद्धि गुणरूपी रत्नों से शोभा को धारण किए हैं और जो ज्ञान के समुद्र हैं, ऐसे बलभद्र मुनिराज मुझे वह सुख, शांति और वह मंगल दें, जिससे मन सदा प्रसन्न रहे ॥३७॥

### ५३. मद्यदोष कथा

श्रीमत्सर्वज्ञमानस्य वक्ष्ये सम्पद्विधायकम् । जनानां प्रतिबोधाय मद्यदोषकथानकम् ॥१॥  
 एकचक्रपुरात्पूर्वं गंगां गन्तुं विनिर्गतः । एकपादविधो वेदवेदाङ्गानां सुपारगः ॥२॥  
 स परिव्राजको विष्णुचरणाम्भोजषट्पदः । मार्गे गच्छन्विधेर्योगात्प्राप्तो विन्ध्याटवीं तदा ॥३॥  
 तत्राटव्यां वयोन्मत्तैः प्रोन्मत्तैर्मद्यपानतः । मांसासक्तैः कुमातंगैर्मार्तंगीगीतसङ्गतैः ॥४॥  
 मार्गं रुद्ध्वा धृतः सोऽपि भणितश्चेति रे द्विज । मद्यमांसनवस्त्रीणां मध्ये यद्रोचते तराम् ॥५॥  
 तदेकं क्रियते कर्म त्वया भो नान्यथा ध्रुवम् । जीवता दृश्यते गंगानदी रे मूढमानस ॥६॥  
 सोऽपि तत्र स्मृतेर्वाक्यं चिन्तयामास चेतसि । तिलसर्षपमात्राच्च दोषाः स्युर्मांसभक्षणात् ॥७॥

### ५३. शराब पीने वालों की कथा

सब सुखों के देने वाले सर्वज्ञ भगवान् को नमस्कार कर शराब पीकर नुकसान उठाने वाले एक ब्राह्मण की कथा लिखी जाती है। वह इसलिए कि इसे पढ़कर सर्व साधारण लाभ उठावें ॥१॥

वेद और वेदांगों का अच्छा विद्वान् एकपात नाम का एक संन्यासी एक चक्रपुर से चलकर गंगा नदी की यात्रार्थ जा रहा था। रास्ते में जाता हुआ वह दैवयोग से विन्ध्याटवी में पहुँच गया। यहाँ जवानी से मस्त हुए कुछ चाण्डाल लोग दारु पी-पीकर एक अपनी जाति की स्त्री के साथ हँसी मजाक करते हुए नाचकूद रहे थे, गा रहे थे और अनेक प्रकार की कुचेष्टाएँ में मस्त हो रहे थे। अभाग्य संन्यासी इस टोली के हाथ पड़ गया। उन लोगों ने उसे आगे न जाने देकर कहा—अहा! आप भले आए! आप ही की हम लोगों में कसर थी। आइए, मांस खाइए, दारु पीजिए और जिन्दगी का सुख देने वाली इस खूबसूरत औरत का मजा लूटिए। महाराज जी, आज हमारे लिए बड़ी खुशी का दिन है और ऐसे समय में जब आप स्वयं यहाँ आ गए तब तो हमारा यह सब करना धरना सफल हो गया। आप सरीखे महात्माओं का आना, सहज में थोड़े ही होता है? और फिर ऐसे खुशी के समय में। लीजिए, अब देर न कर हमारी प्रार्थना को पूरी कीजिए उनकी बातें सुनकर बेचारे संन्यासी के तो होश उड़ गए। वह इन शराबियों को कैसे समझाए, क्या कहे, और वह कुछ कहे सुने भी तो वे मानने वाले कब? वह बड़े संकट में फँस गया। तब भी उसने इन लोगों से कहा—बतलाओ मैं मांस, मदिरा कैसे खा पी सकता हूँ? इसलिए तुम मुझे जाने दो। उन चाण्डालों ने कहा—महाराज कुछ भी हो, हम तो आपको बिना कुछ प्रसाद लिए तो जाने नहीं देंगे। आपसे हम यहाँ तक कह देते हैं कि यदि आप अपनी खुशी से खायेंगे तो बहुत अच्छा होगा, नहीं तो फिर जिस तरह बनेगा हम आपको खिलाकर ही छोड़ेंगे। बिना हमारा कहना कि आप जीते जी गंगाजी नहीं देख सकते। अब तो संन्यासी जी घबराये। वे कुछ विचार करने लगे, तभी उन्हें स्मृतियों के कुछ प्रमाण वाक्य याद आ गए— ॥२-७॥